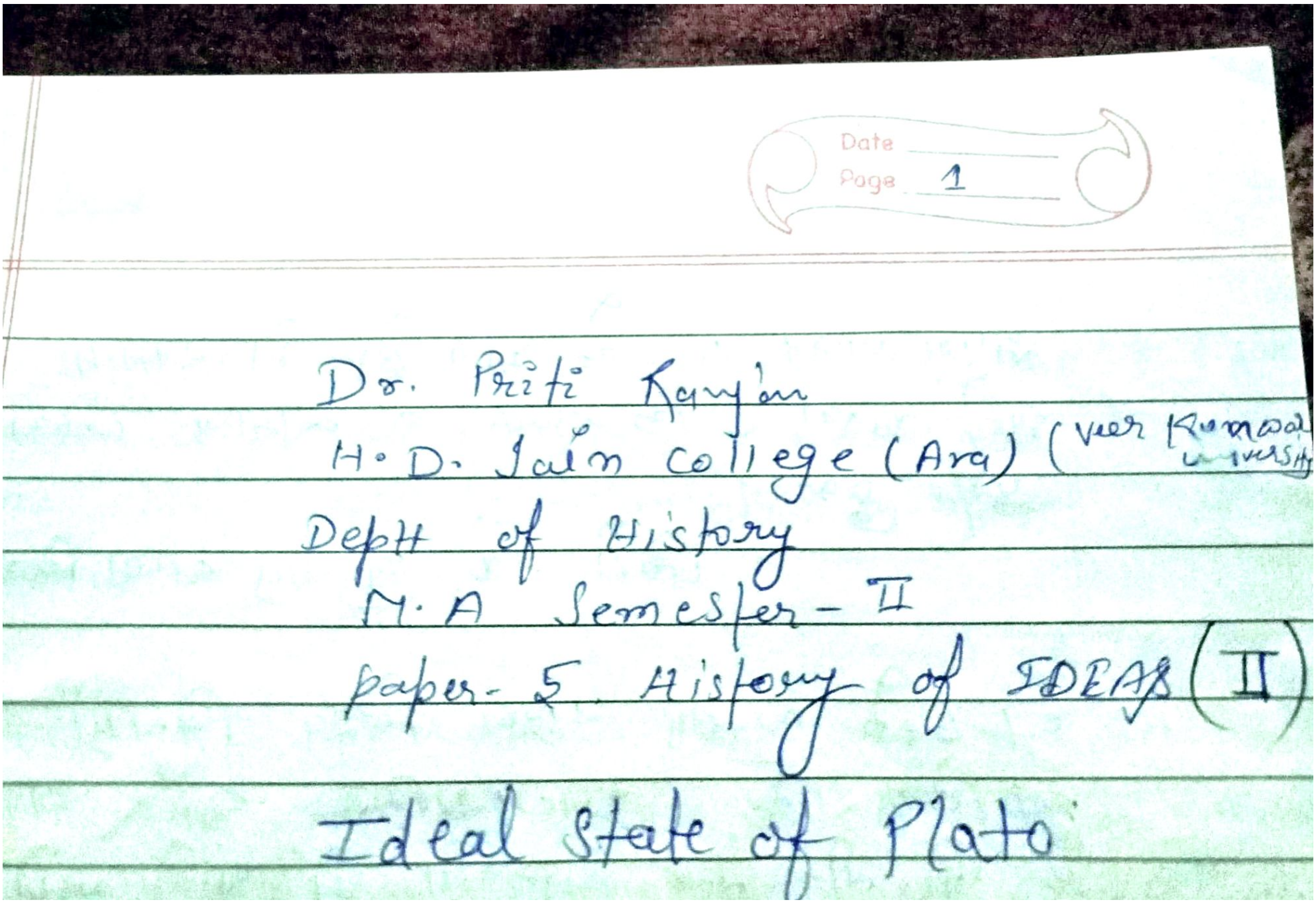

Date
Page 1

Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain college (Ara) (Veer Kunwar University
Deptt of History
M. A Semester - II
paper- 5. History of IDEAS (II)

# Ideal State of Plato

जिससे बढ़ती हुए आबादी के लिए रहने का स्थान प्राप्त हो सके तथा व्यापारियों के लिए बाजार मिल सके। राज्य के जीवन में यह दूसरा चरण है जिस को अस्तित्व में लाने का कारण आर्थिक होता है। इस समय तक समाज में दो वर्ग उत्पादक वर्ग और सैनिक-वर्ग अस्तित्व में आ जाते है।

शीघ्र ही आंतरिक विग्रह उत्पन्न होते है निवासियों के हित परस्पर टकराते है। योद्धाओं में भी विग्रह हो जाता है। ऐसी स्थिति में सामंजस्य पूर्ण व्यवस्था स्थापित करने की समस्या उठ खड़ी होती है। इस कारण तीसरा और अंतिम वर्ग अस्तित्व में आता है, जिसे प्लेटो ने संरक्षक का वर्ग कहा है।

संरक्षक वर्ग राज्य का शासक वर्ग होता है। यह राज्य में व्यवस्थाएं बनाए रखता है, और लोगों को अपने-2 कार्य क्षेत्र में बनाये रखने का कार्य करता है। इस प्रकार राज्य की स्थापना इसके अंतिम रूप में हो जाती है।

## राज्य का स्वरूप:—

प्लेटो ने राज्य को मानव आत्मा का प्रतिबिंब अथवा व्यक्ति का वृहत रूप माना है। राज्य का स्वरूप आणविक नहीं वरन आवयविक है। शरीर अपने पूर्ण राज्य में एक इकाई होता है और उसका रूप एक सम्पूर्णता का होता है, जिसके अंगों को पृथक नहीं किया जा सकता है। राज्य की जनसंख्या के विविध वर्गों की स्थिति ऐसी ही है और केवल वे अपने-2 ही कार्य कर सकते है। प्लेटो ने इस बात पर बल दिया है कि

मानव शरीर में जो सामंजस्य बना रहता है। वह इस कारण से होता है कि प्रत्येक अंग अपने क्षेत्र में अपना कार्य करता है और दूसरे से नहीं झगड़ते। मानव शरीर की ये विशेषताएं राज्य की विशेषताएं हैं। राज्य एक पूर्ण है तथा इसका निर्माण करने वाले व्यक्ति इसके अभिन्न अंग है, केवल राज्य में रहकर ही व्यक्ति अपना विकास कर सकता है और अपनी पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

उत्पादक वर्ग मुख्य रूप से किसान एवं मजदूर होते हैं, इस वर्ग में वे लोग आते हैं, जिनमें आत्मा शक्ति की प्रधानता होती है। आत्म-शक्ति साहस की प्रेरणा उत्पन्न करती है तथा सैनिकों को शांति व युद्ध, सुरक्षा व आक्रमण दोनों में ही संधि का कार्य करना होता है।

तीसरा वर्ग संरक्षकों का होता है इस वर्ग में वे ही लोग आते हैं, जिनमें विवेक शक्ति की प्रधानता होती है। विवेक शक्ति उनमें बुद्धिमत्ता ज्ञान व गुण उत्पन्न करती है, शासकों में इन गुणों का होना आवश्यक है। इस वर्ग का कार्य राज्य में सामंजस्य व्यवस्था व एकता बनाए रखना होता है।

इस प्रकार राज्य मानव आत्मा का प्रतिबिम्ब है, जिसके तीन तत्वों के आधार पर राज्य के लोगों का तीन वर्गों में विभाजन होता है, उसने उत्पादकों को पीतल व्यक्ति सैनिकों को रजत तथा संरक्षकों को स्वर्ण व्यक्ति की संज्ञा दी है।